Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ हलषष्ठी पूजा विधि ॥

॥ षष्ठी माता सबका मंगल करें ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ पूजा का समय और सामग्री ॥

हलषष्ठी या हरछठ भाद्रपद कृष्ण षष्ठी से जुड़ा पर्व है। कुछ स्थानों पर इसे ललही छठ और बलराम छठ भी कहते हैं। तिथि तथा पूजा का समय वर्ष और स्थान के अनुसार पंचांग से देखें।

सामान्य पूजा सामग्री

स्वच्छ जल, रोली या हल्दी, अक्षत, फूल, मौली, धूप, दीपक, बाती, फल और अपनी रीति का प्रसाद रखें। षष्ठी माता का चित्र या प्रतीक और कथा-पाठ की प्रति तैयार रखें। कुछ घरों में झरबेरी, पलाश, कुश या महुआ की डालियों का मंडप बनाया जाता है।

स्थानीय भोग

तिन्नी या पसही चावल, महुआ, भैंस के दूध का दही और अन्य जंगली या बिना हल जोते उगी सामग्री कुछ क्षेत्रों में चढ़ाई जाती है। भोग की वस्तुएँ आपके घर में अलग हों तो उसी रीति को मानें; अप्राप्त वस्तु के लिए पेड़-पौधों को नुकसान न पहुँचाएँ।

सुरक्षित पूजा स्थल

घर के आँगन या स्वच्छ स्थान में छोटी चौकी रखें। मिट्टी से छोटा तालाब या प्रतीक बनाने की रीति हो तो साफ सामग्री लें। दीपक को बच्चों, सूखी टहनियों और कपड़ों से दूर रखें।

॥ हरछठ पूजन का क्रम ॥

१. स्नान और संकल्प

प्रातः स्नान करके साफ वस्त्र पहनें। माता षष्ठी का स्मरण करें और सभी बच्चों के मंगल की प्रार्थना करें। व्रत का स्वरूप अपनी स्वास्थ्य-स्थिति तथा पारिवारिक रीति के अनुसार तय करें।

२. पूजा-स्थान सजाएँ

चौकी पर चित्र या प्रतीक स्थापित करें। अपने यहाँ प्रचलित हो तो झरबेरी, पलाश और कुश से पूजा-स्थल सजाएँ। जल का पात्र और भोग सामने रखें। गणेशजी का स्मरण कर दीपक जलाएँ।

३. अर्पण और कथा

माता को जल, रोली या हल्दी, अक्षत, फूल और उपलब्ध प्रसाद अर्पित करें। हलषष्ठी की ग्वालिन वाली कथा पढ़ें या सुनें। कुछ परिवार कई छोटी कथाएँ भी सुनते हैं; उनकी संख्या घर की परंपरा के अनुसार होती है।

४. प्रार्थना और प्रसाद

आरती की रीति हो तो दीप दिखाएँ और बच्चों की सुरक्षा तथा परिवार में सत्य और करुणा के लिए प्रार्थना करें। फिर प्रसाद बाँटें। पूजा के बाद जल, भोजन या पारण का समय अपनी स्थानीय परंपरा के अनुसार जानें।

॥ षष्ठी माता सबका मंगल करें ॥